नली-कली: सीखने के लिए योग्य बनाना
क्या और अधिक किया जा सकता है?

नमिता गुप्ता

हम सबके मन में कक्षा के कमरे की एक छवि होती है। यह कैसी छवि है, यह निर्भर करता है इस बात पर कि हमें किस तरह पढ़ाया जाता था; इस पर, कि कक्षा के वे कमरे कैसे हैं जिनमें हमारे बच्चे अब पढ़ते हैं; या इस पर, कि वे कक्षा–कक्ष कैसे हैं जिनमें हम स्वयं पढ़ाते हैं? अधिकतर तो कक्षा के इस कमरे में 25 से 50 बच्चों के एक समूह से बात करता हुआ एक शिक्षक होता है, और बच्चे 'भाग्यशाली' हों तो एक ब्लैकबोर्ड, किताबें, वर्कशीट, दीवारों पर रंग–बिरंगे चार्ट तथा अन्य सामग्री होती हैं। सरकारी स्कूल का दृश्य भी कुछ ऐसा ही होने की आशा की जा सकती है, और आमतौर पर तो यह इससे भी अधिक नीरस और एकरस होता है। लेकिन कर्नाटक, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़ आदि जैसे प्रदेशों के सरकारी स्कूलों के निम्न प्राथमिक कक्षाओं के कमरों का दृश्य अब ऐसा नहीं है। उनमें बहुल–ग्रेड, बहु–स्तरीय गतिविधि आधारित शिक्षण प्रोग्राम चलता है जो कई अर्थों में मॉन्टेसरी दृष्टिकोण से मिलता–जुलता है।

कर्नाटक में इस प्रोग्राम को नली–कली कहा जाता है। यह लेख नली–कली के चार वर्ष के एक मूल्यांकन पर आधारित है जो संयुक्त तौर पर प्रोफेसर अनजिनि कोछड़, स्टैन्फोर्ड विश्वविद्यालय, कैटलिस्ट मैनेजमेन्ट सर्विसिज तथा अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा किया गया। ह्यूलेट फाउण्डेशन और अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन ने इसके लिए धनराशि लगाई।

देश भर के शासकीय स्कूल कई तरह की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इनमें से एक शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात की समस्या है। अब देश के सभी निम्न प्राथमिक स्कूलों के लिए एक शिक्षक पर 30 विद्यार्थियों का नियम है। यह भी नियम है कि बसाहट के प्रत्येक 1 किलोमीटर के घेरे में एक प्राथमिक स्कूल हो और एकल–शिक्षक स्कूल न हों। ये नियम मोटेतौर पर लागू तो हो जाते हैं लेकिन अजीब स्थितियाँ पैदा कर देते हैं। मसलन, बहुत से ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय छोटे ही हैं, और उनमें इतने विद्यार्थी नहीं हैं कि प्रत्येक ग्रेड के लिए एक शिक्षक की आवश्यकता पड़े। इसलिए शिक्षकों को एक ही समय पर कई कक्षाएँ या ग्रेड पढ़ाने पड़ते हैं। कई बार अनुमोदित पद रिक्त भी रह जाते हैं या शिक्षक अनुपस्थित रहते हैं – इसीलिए बहु–ग्रेड शिक्षण आवश्यक भी हो जाता है। इसके अलावा विद्यार्थी भी सीखने के अलग–अलग स्तर पर खड़े दिखाई देते हैं।

यह चुनौती ग्रामीण या प्राथमिक शासकीय स्कूलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह तो सीखने–सिखाने की प्रक्रिया की अन्तर्निहित विशेषता है। लेकिन यह समस्या कुछ विशेष समुदायों के उन बच्चों के लिए और भी अधिक गम्भीर हो सकती है जो सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कारणों से नियमित नहीं रह पाते। उनके लम्बे समय के लिए कक्षा से अनुपस्थित रहने की सम्भावना होती है और जब वे वापिस लौटते हैं, तो कक्षा यदि बहुत आगे तक जा चुकी है तो वे खोया हुआ–सा महसूस करते हैं। बहुत से बच्चों और स्कूलों के पास अतिरिक्त मदद तथा पढ़ाई में बाकी सबके बराबर पहुँचने के लिए संसाधन नहीं होते और न ही नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए संसाधन होते हैं। इसलिए शिक्षकों को कई ग्रेड पढ़ाने के साथ–साथ कक्षा में भी कई विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखकर पढ़ाना होता है। अन्तिम बात यह कि बच्चे कई बार स्कूल से अलगाव महसूस करते हैं। यदि स्कूल अनजाना, अप्रासंगिक, मुश्किल या बोरियत भरा हो, तो विशेष तौर से पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चे जिन्होंने 'स्कूली शिक्षा' का विचार अभी पूरी तरह से 'अपनाया' न हो, शायद स्कूल जाना नहीं चाहेंगे।

अनुसन्धान और सिद्धान्त, दोनों इस ओर इशारा करते हैं कि बच्चे तब बेहतर सीखते हैं जब इसमें उनकी रुचि हो, वे व्यस्त हों और अपनी समझ को अधिक व्यवस्थित करने के लिए किसी गतिविधि में लगे हों।

कर्नाटक सरकार के नली–कली कार्यक्रम का उद्देश्य इन कई चुनौतियों से निपटने का है। यह प्रोग्राम 15 साल से भी अधिक हुए, पायलट आधार पर, प्रयोग की तरह शुरू हुआ था और ऋषि वैली द्वारा विकसित RIVER Method पर आधारित था। 2009–10 में इसे कन्नड़ माध्यम के सभी शासकीय प्राथमिक स्कूलों के ग्रेड 1 एवं 2 के लिए कर दिया गया। अगले साल यह ग्रेड–3 में भी आ गया।

नली–कली प्रोग्राम की कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं। सर्वप्रथम, विद्यार्थियों को अलग–अलग ग्रेड में विभाजित नहीं किया जाता। ग्रेड 1, 2 तथा 3 के सभी विद्यार्थी एक शिक्षक के साथ एक ही कक्षा में बैठते हैं। दूसरा, विद्यार्थियों के पास छूट होती है कि वे अपनी गति से सीख पाएँ। एक ग्रेड की सम्पूर्ण पाठ्यचर्या को छोटे–छोटे चरणों में बाँट दिया जाता है। प्रत्येक चरण के साथ कुछ विशेष गतिविधियाँ सम्बद्ध रहती हैं। विद्यार्थी इन गतिविधियों के माध्यम से विषयवस्तु को सीखते–समझते हैं और चरण को पूरा करते हुए सीढ़ी चढ़ते जाते हैं। तीसरे, विद्यार्थियों को समूहों में व्यवस्थित कर दिया जाता है। किसी एक समय पर एक कक्षा में 5 समूह हो सकते हैं, और ये समूह समकक्षों द्वारा आपस में सीख पाने के हिसाब से बनाए जाते हैं। शिक्षक एक या दो समूहों के साथ कार्य करता है। अन्य समूहों में विद्यार्थी या तो सीखने के लिए एक–दूसरे का सहयोग करते हैं या अपने वर्तमान स्तर को मूल्यांकित करने के लिए स्वतन्त्र तौर पर काम करते हैं। एक–दूसरे से सीखने वाले समूह के विद्यार्थी सीढ़ी के अलग–अलग पायदान पर हो सकते हैं। मगर वे सब एक साझा केन्द्रीय विषय या विषयवस्तु पर काम करते हैं। प्रत्येक बच्चा अलग–अलग गतिविधियाँ करता है और वे उसके विशेष स्तर और ग्रेड के मुताबिक होती हैं। चौथे, शिक्षा पद्धति के केन्द्र में करते हुए सीखना होता है। नली–कली की कक्षा में पाठ्यपुस्तकों की बहुत ही कम भूमिका रहती है और उनका प्रयोग मूल रूप से पढ़ने का अभ्यास और दुहराव के लिए ही होता है। गतिविधियों की व्याख्या कार्डों पर होती है और ये सीढ़ी के प्रत्येक कदम से सम्बद्ध होती हैं। विद्यार्थियों से आशा की जाती है कि वे गतिविधियाँ करने में स्वयं ही पहलकदमी लें।

हमने नली–कली प्रोग्राम पर इस मूल्यांकन के लिए चार साल अनुसन्धान किया कि वह बच्चों के सीखने में बेहतरी के लिए कितना प्रभावी रहा है। हमने सामाजिक दक्षताओं, सम्प्रेषण, नेतृत्व सम्बन्धी दक्षताओं आदि जैसे गैर–बोधात्मक परिणामों को भी देखा और कक्षाओं में हुई उन प्रक्रियाओं का भी अध्ययन किया जिनसे ये परिणाम निकलते हैं। इस प्रोग्राम के बारे में शिक्षकों की समझ का मूल्यांकन भी किया। परिणामों से पता चलता है कि

नली–कली का जाँच में आए अंकों के बढ़ने पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव है – विशेष तौर से भाषा में। नीचे के ग्रेडों के लिए यह प्रभाव अधिक है, जब वे नली–कली की कक्षाओं में होते हैं, और यह नीचे के स्तर की योग्यताएँ हासिल किए जाने से चालित होता है। लेकिन बच्चे जब उच्च ग्रेड में होते हैं तो पिछले ग्रेडों में सीखी गई बातें ही सीख रहे होते हैं। इसके साथ ही नेतृत्वकारी दक्षताओं पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इन स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों के सीखने के निम्न स्तरों के सन्दर्भ में यह विशेष तौर से सकारात्मक परिणाम है। कक्षा–अवलोकन और शिक्षकों के साथ बातचीत से प्रकट होता है कि मूलतः जिन चीजों की आवश्यकता है वे स्कूलों में मौजूद हैं। इसका अर्थ है कि शिक्षकों और बच्चों ने कक्षा को नए ढंग से व्यवस्थित करने के तरीके और शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्ध में आने वाले बदलाव के मुताबिक स्वयं को ढाल लिया है। विद्यार्थी स्वयं को अपने वर्तमान स्तर में स्थित करने, कक्षा में की जाने वाली अपनी गतिविधि को चिह्नित करने और अपने समूह में शामिल होने में सहज महसूस करते हैं। इससे संकेत मिलता है कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को एक तरह से अपना लिया गया है – और यह भी कि वे स्वयं को उसमें शामिल महसूस करते हैं। शिक्षक भी इस प्रोग्राम के बारे में आमतौर पर जानकारी का उच्च स्तर दर्शाते हैं। उसके मुख्य पहलुओं की जानकारी उन्हें है और यह भी कि वह कैसे चलता है। लेकिन नली–कली प्रोग्राम में शिक्षक की सीमित ही भूमिका है। उन्हें एक या दो समूहों के साथ ही अन्तरंग तरीके से काम करना होता है। अन्य समूहों के काम पर तो एक व्यापक निगाह ही रखनी होती है। उन्हें अब विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु के मध्यस्थ का काम नहीं करना होता क्योंकि आशा की जाती है कि गतिविधियाँ तो विद्यार्थियों द्वारा ही चलाई जानी हैं। इसका अर्थ है कि शिक्षक और विद्यार्थी के आमने–सामने होने का समय बहुत कम ही रहता है। इस 'घाटे' को अपने साथियों से सीखने और स्वयं सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से पूरा किया जाता है। लेकिन हमारे अनुसन्धान से जानकारी मिलती है कि 'एक–दूसरे से सीखने वाले' समूहों में से 20 प्रतिशत समूहों में विद्यार्थी बहुत ही कम परस्पर क्रिया में रहते हैं। यदि वे एक–दूसरे से बात भी नहीं करते तो क्या वे एक–दूसरे से सीख सकते हैं? यह भी स्पष्ट नहीं है कि किस प्रकार सामग्री और शिक्षक–प्रशिक्षण को सहायक बनाने के लिए उस पर नए ढंग से विचार किया गया है जबकि यह एक उच्च कोटि की दक्षता है। लगता है कि नली–कली के केन्द्र में अपनी गति से सीखने और एक–दूसरे से सीखने के विचार को सैद्धान्तिक स्वरूप देने का काम अपेक्षा से कम ही हो पाया है। प्रोग्राम में निहित कुछ अन्तर्द्वंद्व भी हैं। यह विद्यार्थियों को अपनी गति से सीखने की गुंजाइश देता है, मगर इस शर्त पर कि वे सब अन्तिम छोर पर एक साथ, एक ही समय पर पहुँचें।

यह हमें इस बहुत ही महत्त्वपूर्ण सवाल पर ले आता है कि नली–कली बच्चों को किस बात के काबिल बना रहा है? स्कूल में एक खुला माहौल होना जिसमें शोर मचाने पर दण्ड न दिया जाए और जो मित्रों के साथ काम करने को प्रोत्साहित करता हो, अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थी भाषा और गणित में पहले तीन सालों में बुनियादी योग्यताएँ हासिल कर रहे हैं। लेकिन नली–कली विद्यार्थियों को ग्रेड 4 और 5 के परम्परागत कक्षा–कक्षों में सीखने के लिए पर्याप्त तौर पर सक्षम नहीं बनाता। इससे पहले कि नली–कली में छुपी सभी सम्भावनाओं को टटोला जा सके, नली–कली के कक्षा–कक्ष में शिक्षक की भूमिका के बारे में अधिक गहराई से सोचने की आवश्यकता है, और उस सामग्री के बारे में भी, जिसकी आवश्यकता उसे इस भूमिका को प्रभावशाली तरीके से निभाने के लिए होगी।

सार

कर्नाटक में नली–कली प्रोग्राम गतिविधि–आधारित और बहु–ग्रेड तथा बहु–स्तरीय है। विद्यार्थी अपने सीखने के स्वयं मालिक हैं और अपनी गति से काम करते हैं। उपलब्धि में बढ़ोत्तरी तो है मगर सीमित ही है। एक–दूसरे से सीखना पर्याप्त ढंग से नहीं हो रहा और न ही यह स्पष्ट है कि यह कैसे किया जाना है।

नमिता गुप्ता अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र, शिक्षा नीति और अनुसन्धान पढ़ाती हैं। वे प्रारम्भिक बाल शिक्षा, एम.जी.एम.एल. तथा शिक्षा में हिस्सेदारी के कारकों जैसे नीति–आधारित मुद्दों पर बड़े स्तर के अनुसन्धान में शामिल रही हैं। उनसे namita@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवादः** रमणीक मोहन